# कुट्टन को मिली खुशी

सिरीन कासिम
चित्राँकनः सोनल पनसे

कथा की 300एम थिंकबुक

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

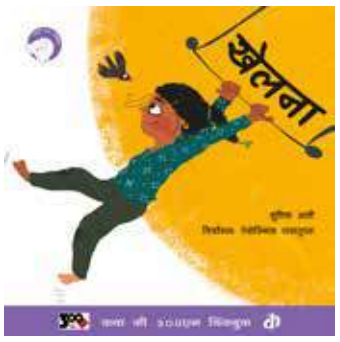

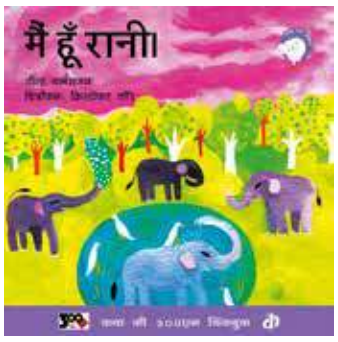

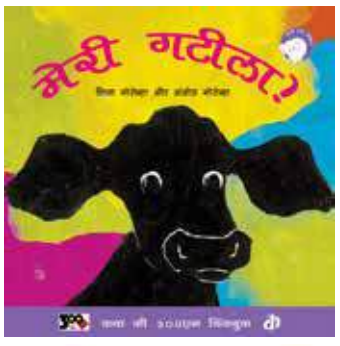

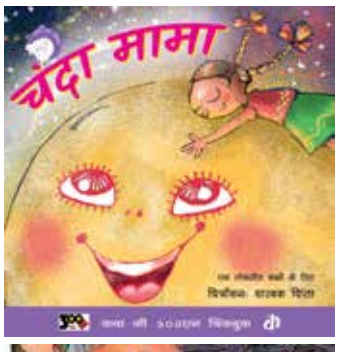

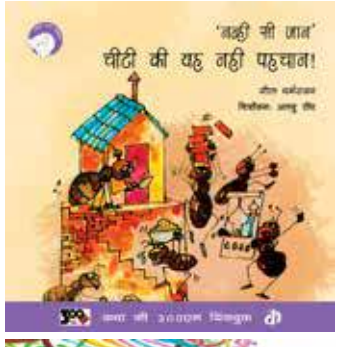

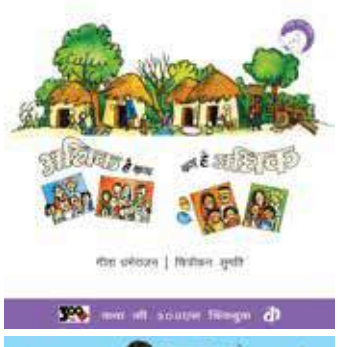

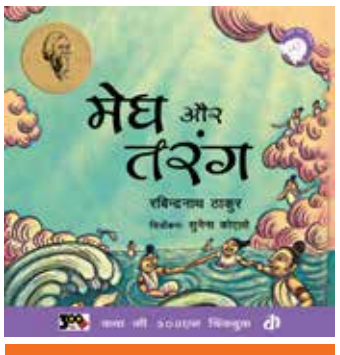

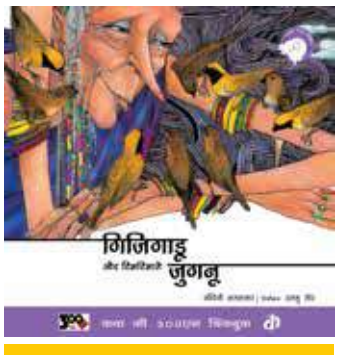

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"India's multicultural identity through the stories."

— The Pioneer

a katha book
for children
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx

इसकी इंडिगो श्रृंखला में

एक दोपहर, कुट्टन एक लम्बी गहरी नींद से उठा। उसके तीन छोटे ममेरे भाई-बहन खूब शोर मचा रहे थे। वे किसी चीज़ को लेकर बहुत उत्साहित लग रहे थे।

कुछ बात ज़रूर थी, कम से कम इन नन्हें-मुन्नों के लिए।

वे तीनों कितने छोटे थे। और कुट्टन अब अपने आपको काफ़ी बड़ा समझने लगा था।

अब वो लगभग हो ही गया था **बड़ा**।

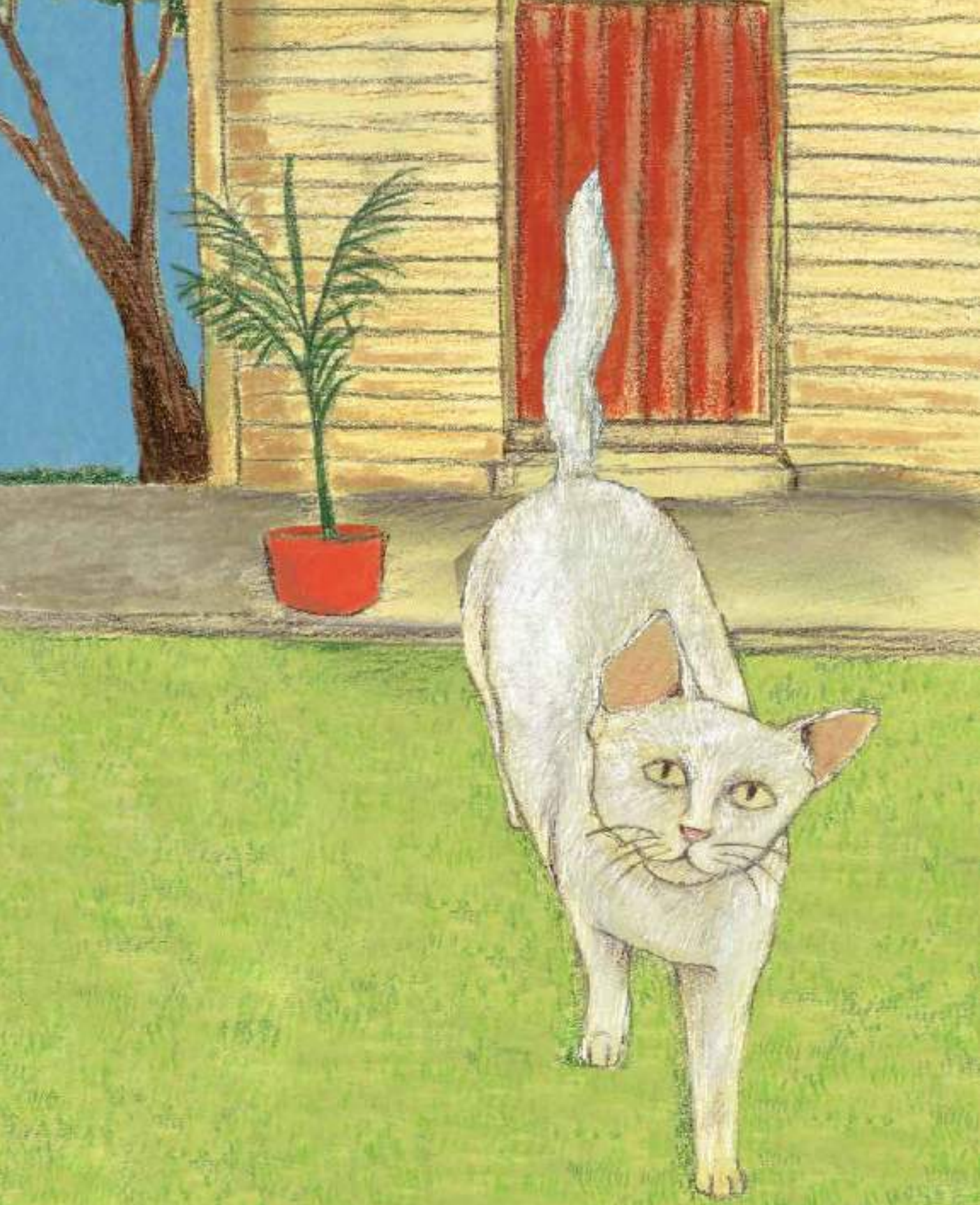

उसने एक अलसाई–सी अंगड़ाई ली, अपने आप को अच्छी तरह झकझोरा, झाड़ा, और फिर शान से टहलता हुआ उन तीनों के पास पहुँचा।

तभी उसकी नज़र हरी पत्तियों के बीच एक पीली, चमकती हुई चीज़ पर पड़ी। आज सुबह जब वह वहाँ सो रहा था, तब तो वह नहीं थी।

उन तीनों में सबसे छोटी ने
डरते-डरते कुट्टन से पूछा, "तुम्हें
पता है वो क्या है? हमने इसे
पहले कभी नहीं देखा।"

कुट्टन मुस्कुराया, अपना गला
साफ़ किया और बोला, "हाँ,
बेशक! भला यह भी कोई पूछने
वाली बात है!"

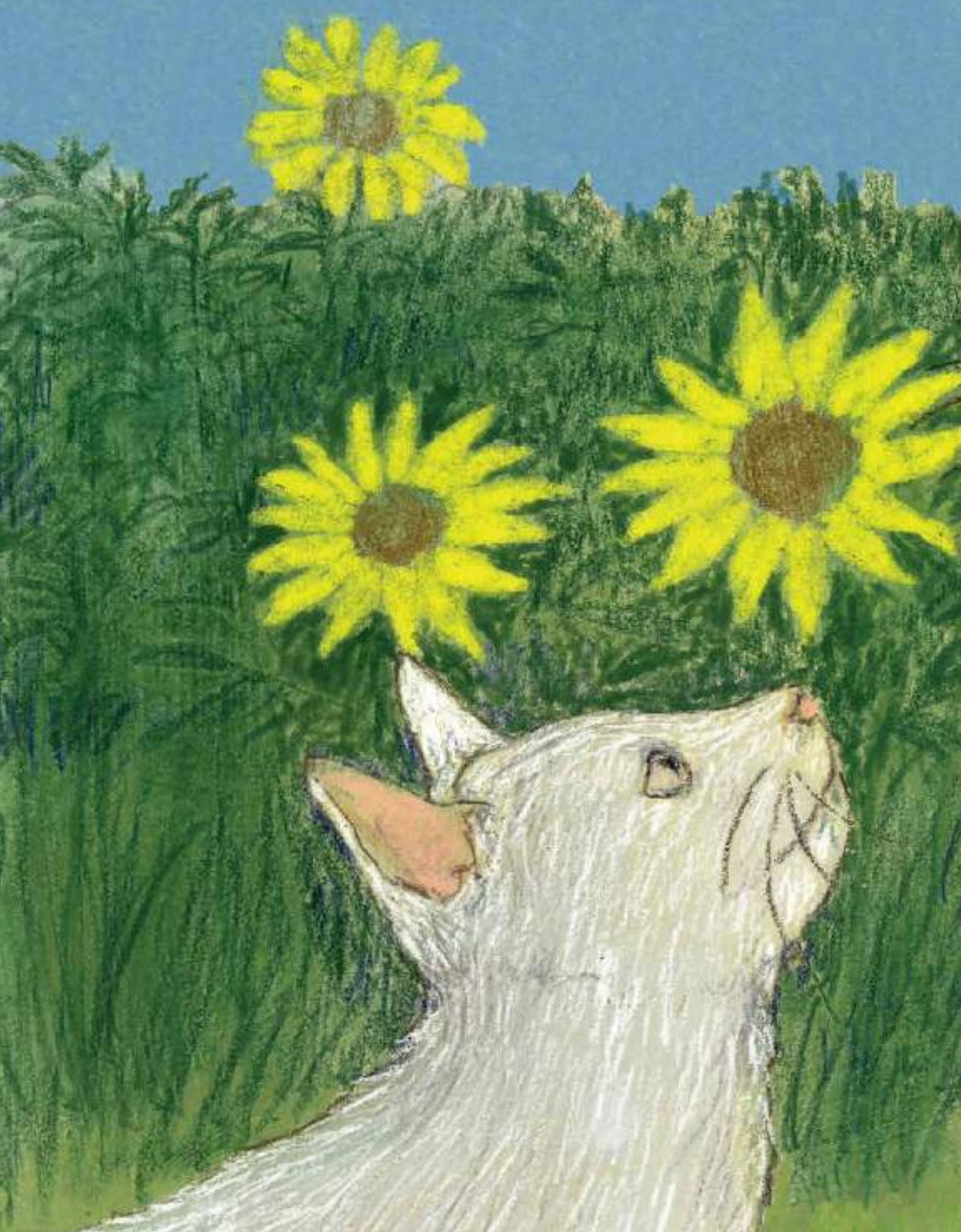

पिछले साल भी कुट्टन ने यही चीज़ देखी थी। और माँ ने उसे समझाया भी था कि वह क्या है। पर अब उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था।

उफ़! कितना बेवकूफ़ था वह!

अब मैं उनसे क्या कहूँ – कि मुझे नहीं पता? कभी नहीं! मैं इन नन्हों को यह बात कभी नहीं जानने दूंगा!

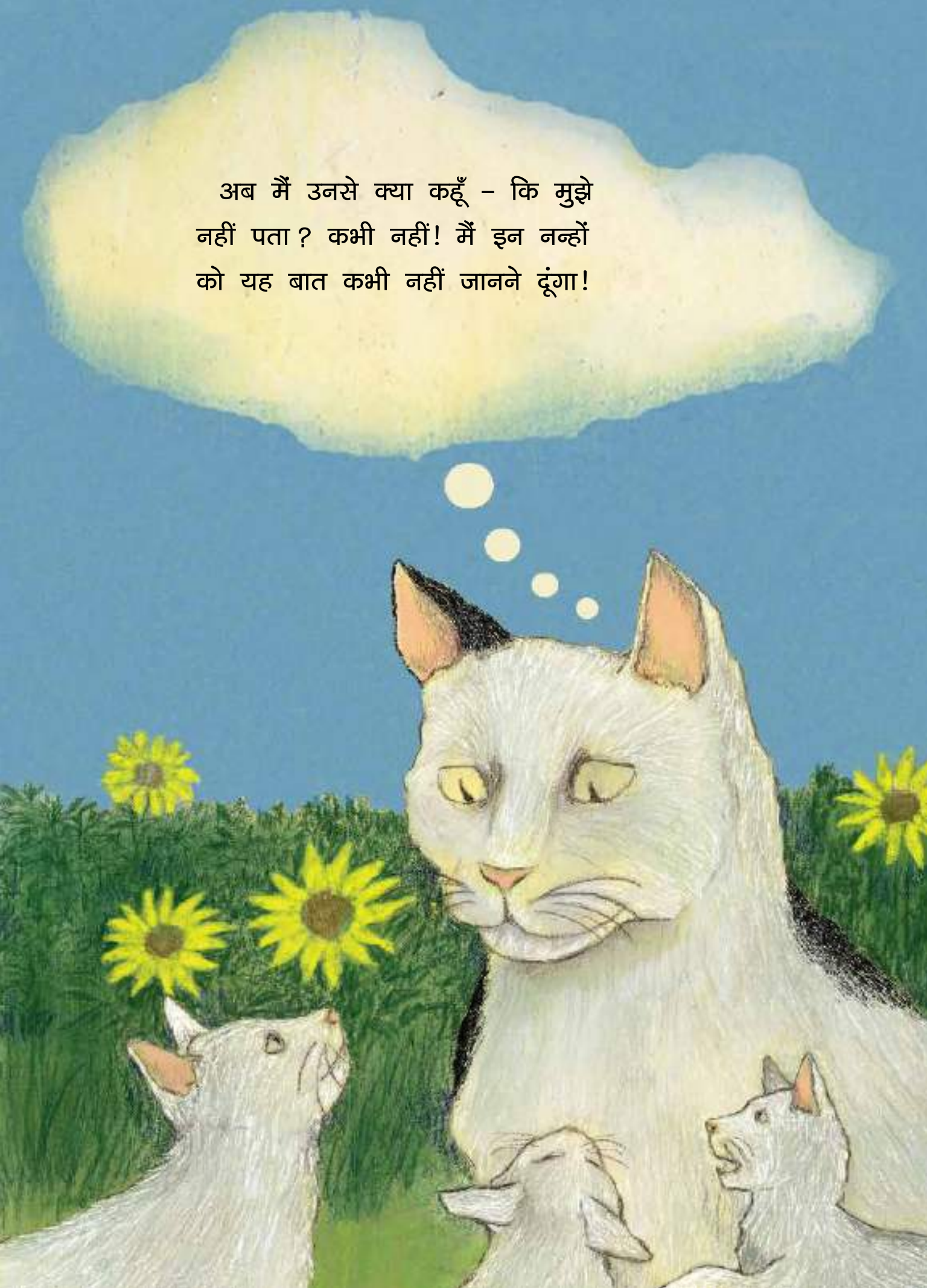

पिछली बार, उस सुन्दर औरत ने थोड़ी–सी मिट्टी खोदी थी, उस पर पानी डाला था और फिर उस जगह को एक जाली से ढक दिया था।

फिर अचानक एक दिन उस मिट्टी में से हरे पत्ते निकले। और थोड़े दिन बाद, कुछ लाल–सा भी। कुट्टन तो बहुत डर गया था! लेकिन वह औरत और उसकी बेटी दोनों बहुत खुश हुए थे।

मुझे उसका नाम याद क्यों नहीं आ रहा?
तब वो लाल था, और अब पीला है। पर है
तो वो एक ही चीज़! कुट्टन ने याद करने की
बहुत कोशिश की, पर उसे याद नहीं आया।
कुट्टन को लगा उसे कुछ तो कहना चाहिए।

“अच्छा, अब तीनों ध्यान से सुनो। उस औरत
को ये मिट्टी बहुत अच्छी लगती है। हर साल वो
इसे प्यार से खोदती है। फिर उसपर ढेर सारा
पानी डालती है। और जब हम इस मिट्टी को
खोदने जाते हैं, तो वो हमें भगा देती है।”

"फिर वो उस मिट्टी में छोटे-छोटे दाने डालती है।

कभी **सफ़ेद**।

कभी **काले**।

फिर जानते हो क्या होता है?"

"क्या?" तीनों बच्चे एक साथ चिल्लाये।

"ये छोटे-छोटे हरे लोग मिट्टी में से निकलते हैं। इन्हें हम पत्तियाँ कहते हैं। ठीक वैसे जैसे मुझे कुट्टन कहते हैं।"

"अरे, पर हमें तो ये पता है!" तीनों छोटे बोले। "लेकिन वो पीली चीज़ क्या है? हमें बताओ ना प्लीज़!"

अब तो कुट्टन फँस गया था। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था कि अब क्या कहे।

फिर अचानक उसे जवाब मिल गया।

“खुशी! यह खुशी है!” उसने कहा।

“खुशी?” तीनों ने शक की निगाहों से पूछा।

“हाँ! तुम लोग समझ नहीं रहे। ये सब हवा में लहराते हुए कितने सुन्दर लगते हैं। और इस हरियाली को देखकर हम कितने खुश होते हैं, हैं ना?

“ये लोग भी खुश होते हैं इन हरी-हरी पत्तियों को देखकर।

“तो फिर सभी खुश लोग और सभी खुश बिल्लियाँ इन पत्तियों को भी खुश कर देते हैं।

“और फिर ये पत्तियाँ हमें ये छोटी-छोटी खुशियाँ देती हैं।”

“यह है एक पीली खुशी। पिछले साल मैंने एक लाल खुशी देखी थी। कितने सुन्दर हैं ना?”

अब उन बच्चों को समझ आया।

“अरे देखो–देखो, तितलियों और भँवरों को भी यह खुशियाँ कितनी पसंद हैं।”

“बेशक। इन्हें तो सभी चाहते हैं!” कुट्टन ने कहा।

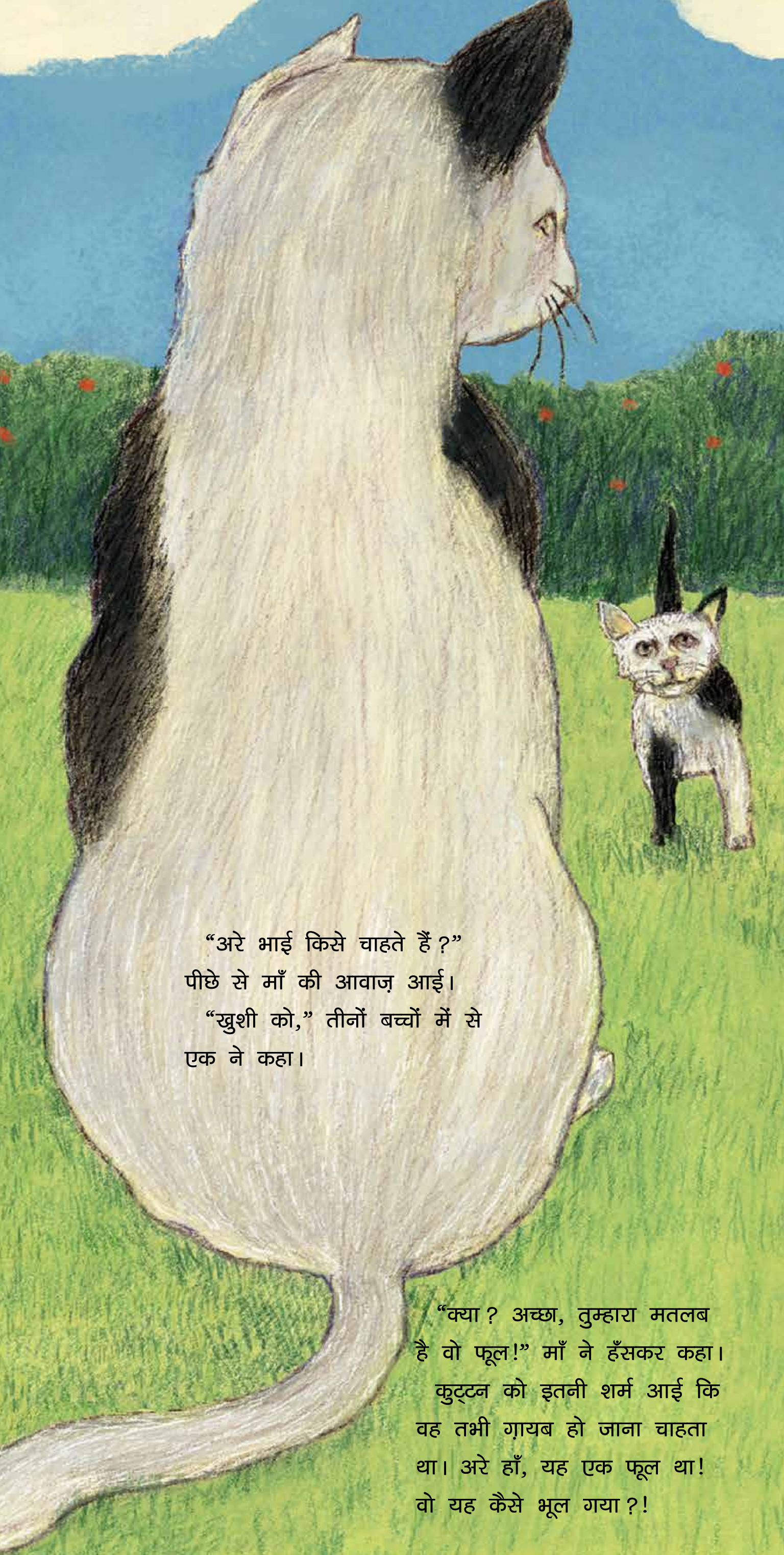

"अरे भाई किसे चाहते हैं?" पीछे से माँ की आवाज़ आई।

"ख़ुशी को," तीनों बच्चों में से एक ने कहा।

"क्या? अच्छा, तुम्हारा मतलब है वो फूल!" माँ ने हँसकर कहा।

कुट्टन को इतनी शर्म आई कि वह तभी ग़ायब हो जाना चाहता था। अरे हाँ, यह एक फूल था! वो यह कैसे भूल गया?!

दो छोटे बिलौटों ने कुट्टन को देख मुँह बनाया और वहाँ से चल दिए। पर तीसरी ने कुट्टन से कहा, "मिआँउ। तुम बुरा मत मानो। मुझे तुम्हारी खुशी वाली बात बहुत अच्छी लगी। मेरे ख़याल में खुशी एक अच्छा नाम है। शायद तुम ठीक ही कह रहे थे।"

यह सुनकर कुट्टन को बहुत अच्छा लगा।

शायद कभी–कभी सब सही होते हैं, और कभी सब ग़लत। उसे जहाँ तक पता था, ये फूल खुशी ही थे।

आखिरकार, कुट्टन अपने आप से, अपनी नन्हीं बहन से, और उन खुशी के फूलों से, सब से बहुत खुश, हरी-हरी घास पर उछलता, कूदता चला गया - इतना खुश, इतना हल्का-फुल्का मानो वह फिर से एक छोटा-सा बिलौटा बन गया हो।

**सिरीन कासिम** लन्दन के स्कूल ऑफ़ ओरिएण्टल एंड अफ्रीकन स्टडीज़ से दक्षिणी एशिया के विषय पर एम.ए. की डिग्री के लिए पढ़ रही हैं। वह लिखते–लिखते दुनिया को बचाने का ख़्वाब भी देखती हैं।

**सोनल पनसे** एक चित्रकार और लेखक हैं। वह नासिक, महाराष्ट्र, में रहती हैं। वह विभिन्न मीडिया में वास्तविक, काल्पनिक, और अमूर्त प्रसंगों पर चित्रकला करती हैं। उनके काम का उल्लेख भारत, आस्ट्रेलिया और अमेरिका के प्रकाशनों में किया गया है। लन्दन और मुंबई में भी उन्होंने अपनी चित्रकला की प्रदर्शनी की है।

# कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

**– चार्ल्स लैंड्री,** ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

पहला हिंदी संस्करण 2021
कृति स्वामित्व © कथा, 2008, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © सीरीन कासिम
चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

**हमारा लक्ष्यः** हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।